

भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 29-09-2026

कृषि परामर्श: झारखंड में एल नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु उपाय

झारखंड राज्य में इस मानसूनी सीजन (1 जून से 29 सितम्बर 2026 तक) में कुल 985.6 मिमी वर्षा दर्ज की गई है, जो कि सामान्य वर्षा (1018.3 मिमी) से लगभग 3% कम है। हालांकि, राज्य में 11-17 सितम्बर के दौरान मानसून की बेरुखी की वजह से 49% कम वर्षा हुई, जिसके कारण राज्य के पाकुर, देवघर, कोडरमा, गढ़वा और गिरिडीह जैसे 10 से अधिक जिलों को वर्षा की कमी का सामना करना पड़ा। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), रांची केंद्र के पूर्वानुमान के अनुसार, राज्य में अगले 4 दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है। अगले 3 दिन आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए रहने तथा कहीं-कहीं पर हल्के से मध्यम दर्जे की वर्षा या मेघ गर्जन होने की संभावना है, तत्पश्चात राज्य में मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना है। इस स्थिति को देखते हुए, खड़ी खरीफ फसलों (विशेषकर धान) को नमी के तनाव से बचाने और पैदावार सुरक्षित रखने के लिए भा०कृ०अनु०प० के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को निम्नलिखित महत्वपूर्ण उपाय अपनाने की सलाह दी जाती है:

- खेतों की मेड़ों की मरम्मत करें ताकि वर्षा/सिंचाई जल का रिसाव कम हो सके।
- सिंचाई तभी करें जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखाई दें; धान में वैकल्पिक गीला और सूखा (AWD) पद्धति अपनाएं।
- वर्षा की कमी की स्थिति में तालाब, डोभा, रिचार्ज पिट आदि में संचित जल का उपयोग जीवन रक्षक सिंचाई हेतु करें।
- धान की फसल वर्तमान में कल्ले फूटने से बालियां बनने की अवस्था में है; इस समय एक सिंचाई अवश्य सुनिश्चित करें। बालियां बनने एवं पुष्पन अवस्था पर नमी बनाए रखें; प्रजनन चरण में नमी की कमी से बचाव अत्यंत आवश्यक है।
- वृद्धि के इन चरणों में पानी की कमी से उत्पन्न नमी तनाव की स्थिति में पत्तियों पर 2% यूरिया (20 ग्राम/लीटर) या 0.5-1% (5-10 ग्राम/लीटर) पोटाशियम क्लोराइड /पोटाशियम नाइट्रेट का छिड़काव करें।
- सूक्ष्म पोषक तत्व जिंक की कमी होने पर 0.5% जिंक सल्फेट (5 ग्राम/लीटर) का छिड़काव करें।
- प्रजनन चरण के दौरान उपज वृद्धि हेतु 2 किग्रा/हेक्टेयर बोरॉन का प्रयोग करें।
- धान (बूटिंग से दूध भरने की अवस्था) में गंधी कीट के नियंत्रण हेतु प्रकाश जाल लगाएं; अधिक प्रकोप पर साइपरमेथ्रिन 25 EC @ 0.5 मिली/लीटर का छिड़काव करें।
- सभी फसलों में सफेद मक्खी एवं रस चूसक कीटों की नियमित निगरानी करें और प्रारंभिक अवस्था में नियंत्रण उपाय अपनाएं।
- मक्का में दाना बनने की अवस्था पर पक्षियों से बचाव हेतु चमकीले फीते खेत में लगाएं।
- उर्वरक/कीटनाशक का छिड़काव केवल साफ मौसम में ही करें।
- पशुओं के लिए हर समय स्वच्छ एवं पर्याप्त मात्रा में पीने के पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- पशुओं को हरा चारा काटने के तुरंत बाद न खिलाएं; इसे कुछ समय तक जमीन पर फैलाकर हल्का सुखाने के बाद ही दें।